ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 231-235**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

समसामयिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के बदलते परिदृश्य में जनसचांर के साधनों की भूमिकाः जनपद श्रावस्ती का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

वेद प्रकाश द्विवेदी

शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध वि0वि0, अयोध्या (उ0प्र0) भारत

Received-06.08.2022, Revised-10.08.2022, Accepted-15.08.2022 E-mail: vedprakashd1991@gmail.com

सारांशः – *किसी भी देश व समाज के विकास में महिलाओं की महती भूमिका होती है देश की महिलाएं अपनी असीम शक्ति के बल पर किसी भी देश के विकास की धारा को जिधर चाहे मोड़ सकती हैं लेकिन इसके लिए जरूरी है, उन्हें समुचित अवसर दिया जाय क्योंकि कहा जाता है, कि पिंजड़े में कैद बहादुर शेर भी कायर लगता है वह अपने बहादुरी की प्रदर्शन तब तक नही कर सकता जब तक कि उसे आजाद न रखा जाय उसी तरह देश की महिलाएं भी कुछ कर गुजरने की इच्छा रखने के बावजूद भी परतंत्रता की बेडी में जकड़े रहने के कारण अपने गुण का प्रदर्शन नही कर पाती। जनगणना 2011 के अनुसार भारत में महिलाओं की जनसंख्या लगभग 58 करोड़ है जो सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 48. 53 प्रतिशत है जो पुरूषों की जनसंख्या के लगभग बराबर है। देश की मेहनती, कर्मठ, जुझारू, संघर्षशील इन महिलाओ को उचित अवसर दिया जाय तो ये भारत को हर क्षेत्र में अग्रणी बना सकती हैं। वर्तमान समय सूचना व संचार प्रोद्यौगिकी का युग है आज जनसंचार के साधनों ने प्रत्येक जन तक अपनी मजबूत पकड़ बनायी है। बड़े–बड़े कार्यालयों से लेकर छोटी–छोटी दुकानों तक में जनसंचार के साधनों का प्रयोग खूब हो रहा है। उसी क्रम में महिलाएं भी इससे अछूती नही रही है पुरूषों के साथ–साथ महिलाएं भी आज मोबाइल, इण्टरनेट, कम्प्यूटर का प्रयोग खूब कर उसका भरपूर लाभ उठाकर अपने आपको को सशक्त महसूस कर रही है। उनकी प्रस्थिति में क्रांतिकारी बदलाव दृष्टिगोचर हुआ है।*

कुंजीभूत शब्द– समुचित अवसर, महिला सषक्तिकरण, परिवर्तन, जनसंचार के साधन, समानता, आत्मनिर्भरता, शिक्षा।

अगर किसी देश को तीव्र गति से विकास करना है, तो इस आधी आबादी को साथ लेकर चलना ही होगा इस आधी आबादी को नजरंदाज करके कोई भी देश तीव्रगति से विकास नही कर सकता भारत में तो महिलाओं की तुलना देवी से की गई है और कहा भी गया है कि "जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता भी निवास करते है।" परन्तु इतिहास के पन्नों को पलटने से पता चलता है कि यहां पर महिलाओं की स्थिति वैदिक काल को छोड़कर अन्य किसी काल में संतोशजनक नही रही है।

रामायण, महाभारत काल में इनके स्थिति में गिरावट आने के साथ मध्यकाल में तो स्थिति बद से बदतर हो गई सतीप्रथा, पर्दाप्रथा जैसी विकट समस्याओं ने जकड़ लिया लेकिन राजाराम मोहनराय, स्वामीदयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे महान समाज सुधारको के अथक प्रयत्न के चलते इनकी स्थिति में क्रान्तिकारी सुधार परिलक्षित हुआ सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियां समाप्त हुई भारत आजाद हुआ अपनी सरकार बनी संविधान का निर्माण हुआ जिसमें इनको बराबरी का अधिकार दिया गया रेल, सडक, डाक, तार, संचार के साधनों (मोबाइल, लैपटॉप, इन्टरनेट आदि) ने इनके प्रस्थिति के बदलाव में चार चाँद लगा दिया जिसका लाभ उठाते हुए आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इस युग में महिलाएं प्रगति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हो रही हैं और देश के विकास में अमूल्य योगदान दे रही हैं।

महिलाओं के बदलते परिदृश्य से आशय– शोध में वर्तमान समय में महिलाओं के बदलते परिदृश्य से आशय जनसंचार के साधनों विशेषकर सोसल मीडिया द्वारा प्राप्त होने वाली जानकारी के माध्यम से महिलाओं में चेतना के वृद्धि व विकास से है जिससे व अपने आपको सुरक्षित व मजबूत पाती है जिससे एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण होता है, पहले वे अपने अधिकारों व कर्तव्यों से अनभिज्ञ थी तो वे दहेज, तलाक, घरेलू, हिसा, उत्पीड़न का शिकार थी परन्तु जनसंचार के साधनों के चलते वे अपने अधिकारों व कर्तव्यों के बारे मे सजग हो गई और वे अपने विचारों को एक दूसरे तक पहुंचाने लगी जिससे उनके प्रस्थिति में बदलाव परिलक्षित हुआ।

साहित्यावलोकन– 1– शोधपत्र " मुक्त अभिव्यक्ति और सोसल मीडिया (सुनील कुमार) पत्रिका मीडिया अं जनसंख्या–मार्च 2020 प्रस्तुत शोध में अध्ययनकर्ता ने पाया कि जनसंचार के साधनों ने अभिव्यक्ति के माध्यम से लोगों को जोड़ने का काम किया है जनसंचार के साधनों से महिलाओं में क्रान्तिकारी बदलाव परिलक्षित हुआ है।

2– शोधपत्र " अभिव्यक्ति का वैकल्पिक मंच" सोसल मीडिया चुनौतियां एवं सम्भावनाएं (राम शंकर) शोध पत्रिका शोध अनुसंधान समाचार अंक दिसम्बर 2020 प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने पाया कि जनसंचार साधनों की तरफ महिलाओं का रूझान तेजी से बढ़ा है इससे नये रोजगार के अवसर प्राप्त होने के साथ सुरक्षा भी मिल रही है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

3–शोधपत्र'' सोसल नेटवर्किंग साइट '' प्रचलित धारणाओं का मूल्याकन (विजय प्रताप) शोध पत्रिका जन मीडिया अंक 10 प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययनकर्ता ने पाया कि सोसल नेटवर्किंग साइट को वर्तमान में जिस तरह से प्रचारित और विज्ञापित किया गया है वह जन संचार के बारे में कई प्रकार के मिथ्या और भ्रम को ढक लेता है लोगों में बोलने की आजादी को लेकर भी इस पत्रिका में चर्चा की गई है।

4–शोध पत्र '' युवाओं के विकास में सोसल मीडिया की भूमिका'' (वाई0एन0 श्रीवास्तव) शोध पत्रिका इंडियन जर्नल आफ सोसल साइन्सेज एसोसायटीज टवस 32 फरवरी 2022 पृष्ठ 82–85 प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने बताया किया जनसंचार के साधनों ने महिलाओं युवाओं को काफी प्रभावित किया है।

शोध का उद्देश्य–

1–महिलाओं के उन्नयन में जनसंचार के साधनों की भूमिकाओं का अध्ययन करना।

2–जनसंचार के साधनों द्वारा हो रहे महिलाओं के सर्वांगीण विकास व परिवर्तन का पता लगाना।

3–सूचना एवं संचार के साधनों का महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

4–महिलाओं का मीडिया के बारे में जानकारी व पहुंच का पता लगाना।

शोध प्रविधि, क्षेत्र व न्यादर्श– प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण व अवलोकन शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है यह शोध कार्य उ0प्र0 के श्रावस्ती जनपद से सम्बन्धित है जिसमें उद्देश्य परक न्यादर्श द्वारा क्षेत्र का चयन किया गया है जो श्रावस्ती जनपद के विकास खण्ड इकौना के 100 महिलाओं पर आधारित है। चयनित क्षेत्र में 100 प्रश्नावली वितरित की गई जिसमें 8 वैकिल्पक प्रश्न शामिल थे इन प्रश्नों को शोध के उद्देश्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था जिसमें जनसंचार के साधनों से सम्बन्धित, महिलाओं से सम्बन्धित, विविध विकास कार्यक्रमों से सम्बन्धित, जनसंचार के साधनों द्वारा महिला जागरूकता और सशक्तिकरण से सम्बन्धित, जनसंचार के साधनों का प्रयोग और उसके प्रभाव से सम्बन्धित प्रश्न सम्लित थे।

तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन– प्रस्तुत अध्ययन में सम्लित महिला उत्तरदाताओं में 18–40 वर्ष की महिलाओं को सम्लित किया गया है। और उन्हीं महिलाओं का चयन किया गया है, जो जनसंचार के साधनों का प्रयोग करती हैं जो महिलाएं सोशल मीडिया से दूर हैं या किसी सोशल नेटवर्किंग साइट का प्रयोग नही करती उनको अध्ययन में शामिल नही किया गया है। प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेशण से निश्कर्श के रूप में जो महत्वपूर्ण परिणाम निकलकर आये हैं उनका वर्णन निम्न है–

तालिका संख्या–01

सूचना के लिए सोशल नेटवर्किंग साइट का उपयोग?

सोसल साइट	संख्या	प्रतिशत
ह्वाट्स आप	60	60
फेसबुक	23	23
ट्वीटर	10	10
अन्य	07	07
कुल	100	100

तालिका सं0 (01) से स्पष्ट होता है, कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में 60 प्रतिशत महिलाएं ह्वाट्सआप का इस्तेमाल करती हैं 23 प्रतिशत महिलाएं फेसबुक का 10 प्रतिशत महिलाएं अन्य सोशल साइट का उपयोग करती है। निष्कर्ष ज्यादातर महिलाएं ह्वाट्सअप का प्रयोग करती हैं।

तालिका संख्या–02

कितने समय तक महिलाएं जनसंचार के साधन का उपयोग करती हैं?

समय (मिनट में)	संख्या	प्रतिशत
10–20	30	30
20–40	40	40
40–60	20	20
60 से अधिक	10	10
कुल	100	100

तालिका संख्या–2 से स्पष्ट होता है, कि अध्ययन में सम्मिलित महिला उत्तदरदाताओं में 30 प्रतिशत महिलाएं प्रतिदिन 10–20 मिनट 40 प्रतिशत महिलाएं 20–40 मिनट 20 प्रतिशत महिलाएं 40–60 मिनट तथा 10 प्रतिशत महिलाएं 60 मिनट से अधिक किसी न किसी सोशल साइट पर समय व्यतीत करती है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

तालिका संख्या–03

विविध विकास कार्यक्रमों के बारे में सूचना जनसंचार के साधनों से प्राप्त करती है?

सूचना	संख्या	प्रतिशत
हमेशा	50	50
कभी–कभी	45	45
कह नही सकते	02	02
अन्य माध्यओं से	03	03
कुल	100	100

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है, कि 50 प्रतिशत महिलाए हमेशा विकास कार्यक्रमों के बारे में जनसंचार के माध्यमों से जानपाती हैं 45 प्रतिशत महिलाएं कभी–कभी जानपाती है 02 प्रतिशत महिलाओं ने इस मुद्दों पर राय नही दिया जबकि 03 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि उन्हे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार व अन्य विकास कार्यक्रमों के बारे में अन्य माध्यमों से जानकारी प्राप्त होती है।

तालिका संख्या–04

जनसंचार के साधनों का महिलाओं पर प्रभाव?

विकल्प	**संख्या**	**प्रतिशत**
हमेशा	45	45
कभी–कभी	40	40
कह नही सकते	15	15
कुल	100	100

तालिका संख्या–04 से स्पष्ट होता है, कि अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओं में 45 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे जनसंचार के साधनों से प्रभावित होकर विविध विकास कार्यक्रमों का लाभ उठाती हैं 40 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे कभी उससे प्रभावित होती हैं जबकि 15 प्रतिशत ने कहा कि वे इस बारे में कुछ कह नहीं सकती।

तालिका–05

विकास कार्यक्रम से जुड़ी जानकारियां सोशल मीडिया पर शेयर करती हैं?

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
हमेशा	60	60
कभी–कभी	20	20
कह नही सकते	15	15
कभी नही	05	05
कुल	100	100

तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 60 प्रतिशत महिलाएं विकास कार्यक्रम की जानकारी मिलने पर वे दूसरे को साझा करती हैं। 20 प्रतिशत महिलाएं कभी–कभी शेयर करती है 15 प्रतिशत महिलाओं ने इस मुद्दे पर बताया कि कुछ कह नहीं सकती जबकि 05 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे कभी नही शेयर करती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि अधिकांश महिलाएं विकास कार्यक्रम के बारे में जानपाती है, तो वे तुरन्त दूसरो को पहुंचाती है, जिससे अन्य भी उसका लाभ उठा सके।

तालिका संख्या–06

महिलाओं के हितो का संरक्षण–

संरक्षण	संख्या	प्रतिशत
हॉ	50	50
कभी–कभी	46	46
कह नहीं सकते	04	04
कुल	100	100

तालिका संख्या–06 से स्पष्ट होता है, कि अध्ययन में शामिल महिला उत्तरदाताओं में 50 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि जनसंचार के साधनों ने हम लोगों के हितो के संरक्षण में महती भूमिका निभाया है, 46 प्रतिशत ने बताया कि जनसंचार के साधन कुछ हद तक मदद करते है जबकि 4 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि कुछ नही सकते निष्कर्षतः कहा जाता है, कि

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

जनसंचार के साधन महिलाओं के संरक्षण में कारगर साबित हो रहे हैं।

तालिका संख्या–07

जनसंचार के साधनों से महिलाओं के प्रस्थिति में बदलाव परिलक्षित हुआ?

विचार	संख्या	प्रतिशत
हॉ	80	80
नहीं	08	08
कह नही सकते	12	12
कुल	100	100

तालिका संख्या–07 से स्पष्ट होता है, कि अध्ययन में शामिल 80 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि जनसंचार के साधनों ने महिला सशक्तिकरण में योगदान दिया है जिससे महिलाओं की प्रस्थिति में क्रान्तिकारी बदलाव परिलक्षित हुआ है वही 8 प्रतिषत महिलाओं ने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ा है, जबकि 12 प्रतिशत महिलाओं ने इस सम्बन्ध में कोई विचार नही व्यक्त किया।

तालिका संख्या–08

सोसल मीडिया से प्राप्त सूचनाएं प्रमाणित होती है?

सूचना	संख्या	प्रतिशत
हॉ	40	40
कभी–कभी	54	54
कह नही सकते	06	06
कुल	100	100

तालिका संख्या–08 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित महिला उत्तरदाताओं से 40 प्रतिशत महिलाओं का मानना है, कि सोसल मीडिया से प्राप्त सूचनाएं प्रमाणित होती है, 54 प्रतिशत का मानना है, कि इससे प्राप्त सूचना कभी–कभी सत्य होती है जबकि 6 प्रतिशत महिलाओं ने अपना विचार प्रकट नहीं किया। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अधिकांश महिलाएं सोसल मीडिया पर विश्वास करती हैं।

निष्कर्ष– जैसे कि हम जानते है कि आज का युग सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी का युग है आज शायद ही कोई ऐसा वर्ग होगा जो जनसंचार के साधनों का प्रयोग न करता हो उसी कड़ी में महिलाएं भी आज जनसंचार के साधनों का प्रयोग खूब कर इसका लाभ उठा रही हैं जनसंचार के साधन विविध विकास कार्यक्रमों को प्रसारित करने में महती भूमिका निभा रहे हैं।

पहले जब जनसंचार के साधन नही थे तब महिलाएं अपने विचारों का आदान प्रदान नहीं कर पाती थी तमाम सामाजिक समस्याओं (दहेज, तलाक, घरेलू, हिसा, उत्पीड़न, मारकाट आदि) से जकड़े रहने के बावजूद भी वे अपने विचारों–समस्याओं को दूसरे लोगों के साथ–साथ पुलिस, जेल, कोर्ट आदि तक नहीं पहुँचा पाती थी।

कष्ट पूर्वक जीवन जीने के लिए विवश थीं परन्तु जनसंचार के साधनों के विकास के चलते अब वे अपनी समस्याओं को दूसरे लोगों तक पहुंचाने लगी है सरकार ने इनको उत्पीड़न से बचाने हेतु 1090, 1076, 112 जैसे हेल्पलाइन नम्बर जारी कर दिया है जिस पर फोन करके अपनी समस्या से अवगत कराते हुए दोशी को सजा दिला सकती है और अपने को सुरक्षित कर सकती है।

अतः कहा जा सकता है, कि समसायिक परिप्रेक्ष्य में जनसंचार के साधनों ने महिलाओं के प्रस्थिति में क्रान्तिकारी बदलाव घटित किया है जिससे आज महिलाएं भी इस वैविध्यपूर्ण समाज में सुकून भरा जीवन जीने लगी है उनका सम्पूर्ण परिदृष्य बदल रहा है।

सुझाव– जनसंचार के साधनों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का स्वरूप बदला है, पहले की तरह अंकुश, नियंत्रण व शर्ते अब नही रही आज जनसंचार के साधन प्रत्येक वर्ग के दिन चर्या में शामिल हो गये हैं। महिलाएं भी इससे जुड़कर अपनी प्रतिक्रिया, भाव, विचार व्यक्त कर रही हैं।

अतः जनसंचार के साधनों के द्वारा विकास से जुड़ी जानकारियॉ और विविध विकास कार्यक्रमों को प्रत्येक महिलाओं तक पहुंचाया जाना चाहिए जिससे महिलाएं भी पुरूशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सके और अपने को सशक्त महसूस करते हुए देश को सशक्त करने में योगदान देते हुए सामाजिक न्याय के वातावरण में स्वतंत्रता पूर्वक जी सके।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मीडिया पत्र अंक पत्र मार्च 2016, शोध आलेख–'' मुक्त अभिव्यक्ति और सोसल मीडिया'' सुनील कुमार।
2. गुप्ता विनीता 2015 ''संचार और मीडिया'' शोधः नई दिल्ली वाणी प्रकाशन।
3. कुरूक्षेत्र पत्रिका अप्रैल 2022'' आत्मनिर्भर भारत के लिए महिला सशक्तिकरण'' डॉ0 नीलम और डॉ0 तनु सेठी।
4. कुरूक्षेत्र पत्रिका अप्रैल 2022 '' संचार प्रौद्योगिकी से समावेशी विकास'' भक्ति जैन और ईशिता सिरभीकर।
5. कुरूक्षेत्र पत्रिका अप्रैल 2022 '' सशक्त होती महिलाए'' चरण जीत सिंह।
6. कुमार राधा'' स्त्री संघर्श का इतिहास'' दिल्ली 1984 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
7. अहूजा राम '' भारतीय सा0 व्यवस्था'' रावत पब्लिकेशन जयपुर।

*****